E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(4): 11-14
Received: 15-01-2025
Accepted: 28-02-2025

धीरज प्रताप मित्र
शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
धीरज प्रताप मित्र
शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

वज्रयान तंत्र साधना तथा सिद्ध परंपरा: भारतीय तांत्रिक परंपरा में योगदान

धीरज प्रताप मित्र

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i4a.1411

सारांश

भारतीय तांत्रिक परंपरा में वज्रयान बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसे 'मंत्रयान' अथवा 'गुप्तयान' के रूप में भी जाना जाता है, जो मुख्यतया तांत्रिक साधना, गुरु परंपरा एवं ध्यान पद्धतियों पर आधारित है। वज्रयान की साधना पद्धतियाँ भारतीय तंत्र परंपरा यथा शैव, शाक्त, नाथ संप्रदाय आदि से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। प्रस्तुत आलेख में वज्रयान तंत्र साधना तथा भारतीय सिद्ध परंपरा के आपसी अंतर्संबंधों का समाजशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वज्रयान तंत्र साधना में मंत्र, मुद्रा, यंत्र, ध्यान का विशेष महत्व होता है जो कि भारतीय तंत्र परंपरा में समान रूप से मौजूद हैं। सिद्धों की परंपरा विशेषतः महासिद्ध सरहपा, विरूपा, लुइपा आदि ने वज्रयान साधना को समृद्ध किया जिनकी शिक्षाएँ सहजयोग, महायोग तथा कुंडलिनी जागरण से सम्बंधित रही हैं। इस आलेख में वज्रयान तंत्र ग्रंथों यथा गुह्यसमाज तंत्र, हीवज्र तंत्र भारतीय तांत्रिक ग्रंथों से प्राप्त तथ्यगत दृष्टि के माध्यम से इन परंपराओं की समानताओं एवं भिन्नताओं को उजागर किया गया है। यह आलेख सिद्ध करता है कि वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपरा की साधना पद्धतियाँ केवल धार्मिक ही नहीं अपितु मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी प्रभावी रही हैं। इस आलेख के निष्कर्ष भारतीय तंत्र दर्शन और बौद्ध तांत्रिक परंपरा के अंतर्संबंधों को समझने में सहायक होंगे।

कुटशब्द: वज्रयान, तंत्र साधना, सिद्ध परंपरा, कुंडलिनी, महासिद्ध, मंत्रयान, सहजयोग

प्रस्तावना

भारतीय तंत्र परंपरा तथा बौद्ध धर्म के मध्य गहरा अंतर्संबंध रहा है। भारतीय तंत्र परंपरा का उद्भव मुख्यतः शैव, शाक्त एवं बौद्ध मतों में हुआ जिनमें तांत्रिक साधना, यंत्र, मंत्र, ध्यान आदि का प्रमुख स्थान रहा (डेविडसन, 2002)। बौद्ध धर्म में तंत्र परंपरा मुख्यतः वज्रयान के रूप में विकसित हुई जो 'मंत्रयान' अथवा 'गुप्तयान' के नाम से भी जाना जाता है। वज्रयान ने न केवल बौद्ध साधना को नया स्वरूप दिया अपितु भारतीय तांत्रिक परंपरा के तत्वों को भी आत्मसात किया जिसके अंतर्गत गुरु-शिष्य परंपरा, तांत्रिक अनुष्ठान, शक्ति (प्रज्ञा) तथा करुणा की अवधारणा को विशेष महत्व दिया गया (स्नेल्ग्रोव, 1987)। बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा की उत्पत्ति छठी-सातवीं शताब्दी के दौरान भारत में ही हुई जो नालंदा तथा विक्रमशिला जैसे प्रमुख बौद्ध शिक्षा केंद्रों में पनपा (सैमुअल, 2008)। यह परंपरा महायान बौद्ध धर्म से विकसित हुई जिसमें तंत्र साधना का समावेश हो गया। वज्रयान में विभिन्न तांत्रिक अनुष्ठानों का प्रयोग किया जाता है जिनमें मंत्र जाप, मंडल साधना, मुद्राओं का अभ्यास, विशेष ध्यान तकनीकें आदि शामिल होती हैं (वेड्मेयर, 2013)। यह साधना पद्धति केवल आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि इसके साथ ही साधक के मानसिक-आधिदैविक उत्थान से भी जुड़ी हुई होती है। वज्रयान में तंत्र परंपरा के सिद्धांतों को बौद्ध दर्शन के अनुरूप ढालते हुए विकसित किया गया जिसमें 'शून्यता' तथा 'बोधिचित्त' की अवधारणा प्रमुख रही (ग्रे, 2016)। भारतीय तंत्र साधना के विकास में भी वज्रयान का महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा इस परंपरा ने भारतीय तांत्रिक परंपराओं को गहनता से प्रभावित किया एवं कदाचित उनसे प्रभावित भी हुई। वज्रयान साधना की कई विधियाँ भारतीय शैव-शाक्त तंत्र से मिलती-जुलती हैं यथा कुंडलिनी जागरण, चक्र साधना, दाक्षिणाचार-वामाचार पद्धतियाँ आदि (वाइट, 2000)। वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपरा के अंतर्संबंध चौरासी महासिद्धों की शिक्षाओं में भी स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं। सिद्ध सरहपा, विरूपा, लुइपा एवं डोम्बीपा जैसे बौद्ध सिद्धों की साधनाएँ भारतीय नाथ संप्रदाय तथा शैव तंत्र साधना से प्रभावित थीं ऐसी मान्यता है (डेविडसन, 2002)। उनकी प्रचलित शिक्षाओं में सहजयोग, महायोग, चक्र जागरण जैसी अवधारणाएँ महत्वपूर्ण होती थीं। इस आलेख का उद्देश्य वज्रयान तंत्र साधना तथा भारतीय तांत्रिक परंपरा के बीच के इन ऐतिहासिक-दार्शनिक संबंधों का विश्लेषण करना है। इस हेतु यह अध्ययन न केवल भारतीय तंत्र परंपरा में वज्रयान के योगदान को उजागर करेगा अपितु यह भी स्पष्ट करेगा कि वज्रयान कैसे भारतीय तंत्र परंपराओं के माध्यम से विकसित हुआ। इस आलेख की प्रासंगिकता इस दृष्टि से भी है कि यह भारतीय अन्य प्रचलित तंत्र एवं बौद्ध तंत्र के बीच की अंतर्संबंधित परंपराओं को एक व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने का अवसर प्रदान करता है।

वज्रयान तंत्र साधना: ऐतिहासिक एवं दार्शनिक परिचय

वज्रयान बौद्ध धर्म छठी-सातवीं शताब्दी के दौरान भारत में नालंदा-विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों में विकसित हुआ तथा बाद में तिब्बत, नेपाल, भूटान एवं मंगोलिया आदि देशों में व्यापक रूप से फैला (डेविडसन, 2002)। महायान बौद्ध धर्म में करुणा (बोधिचित्त) एवं शून्यता की अवधारणा महत्वपूर्ण थीं किन्तु वज्रयान शाखा में इन्हीं अवधारणाओं को तांत्रिक पद्धतियों के माध्यम से आत्मसात किया गया (स्नेल्ग्रोव, 1987)। वज्रयान का उद्देश्य केवल बुद्धत्व को प्राप्त करना ही नहीं अपितु इसके साथ ही साधक को एक तांत्रिक विधि द्वारा शीघ्र मुक्ति का मार्ग प्रदान करना भी था। इसका वैचारिकी एवं परंपरा का प्रसार मुख्यतः गुरुओं तथा महासिद्धों के माध्यम से हुआ जिन्होंने इसे विभिन्न संस्कृतियों में तदनुसार अनुकूलित किया। भारतीय परंपरा में यह साधना न केवल बौद्ध धर्म तक सीमित रही अपितु शैव, शाक्त तथा नाथ तांत्रिक परंपराओं से भी प्रभावित हुई एवं की (सैमुअल, 2008)। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से तिब्बती बौद्ध धर्म में देखी जाती है जहाँ पद्मसंभव ने वज्रयान को एक संगठित रूप में स्थापित किया था। वज्रयान की तांत्रिक विशेषताओं में मंत्र, मुद्रा, मंडल, यंत्र आदि का प्रयोग प्रमुख है। मंत्रों का उपयोग साधक के मानसिक-आध्यात्मिक स्तर को उन्नत करने हेतु किया जाता है जो अन्य भारतीय तंत्र साधना में भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मुद्राएँ तांत्रिक साधना की अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करती हैं साथ ही विशिष्ट ऊर्जा प्रवाह को जाग्रत करने का माध्यम भी होती हैं। मंडल, जो विशेष ज्यामितीय संरचनाओं से युक्त होते हैं वो ध्यान तथा साधना हेतु एक आध्यात्मिक मानचित्र की भूमिका निभाते हैं। यंत्रों का उपयोग विशेषकर शक्ति संचय एवं चेतना के विभिन्न स्तरों पर पहुँचने हेतु किया जाता है। इन सभी तांत्रिक विधियों को साधक को आत्म-परिवर्तन के साथ ही जागरण की ओर ले जाने के लिए प्रयोग किया जाता है (वाइट, 2000)। इस सबके अतिरिक्त वज्रयान साधना में गुरु-शिष्य परंपरा तथा दीक्षा प्रणाली का भी विशेष महत्व होता है जिसके अंतर्गत बिना गुरु की स्वीकृति एवं मार्गदर्शन के वज्रयान की साधनाओं को प्रभावी रूप से नहीं अपनाया जा सकता। गुरु की भूमिका यहाँ केवल शिक्षक की ही नहीं अपितु आध्यात्मिक मार्गदर्शक की भी होती है, जो साधक को गूढ़ तांत्रिक रहस्यों में प्रविष्ट कराता है। वज्रयान में बोधिचित्त, शून्यता, तंत्र योग की अवधारणाएँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। इसमें बोधिचित्त वह अवस्था है जिसमें साधक न केवल स्वयं की मुक्ति के लिए अपितु समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ साधना करता है। शून्यता की अवधारणा, जो विस्तृत रूप से नागार्जुन द्वारा प्रवर्तित मध्यमक दर्शन से ली गई वज्रयान तंत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यह दर्शाती है कि समस्त वस्तुएँ तथा घटनाएँ परस्पर आश्रित हैं एवं उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। तंत्र योग, जिसमें साधक ध्यान, प्राणायाम, आंतरिक साधनाओं के माध्यम से उच्च चेतना की अवस्था को प्राप्त करता है वज्रयान साधना का सर्वप्रमुख अंग है। इस साधना प्रणाली का उद्देश्य 'महासिद्ध' अवस्था को प्राप्त करना है जिसमें साधक सांसारिक सीमाओं को लांघकर परम ज्ञान को आत्मसात कर लेता है। इस भांति वज्रयान न केवल एक धार्मिक पथ है अपितु यह एक गहन तांत्रिक प्रणाली भी है जो साधक को आत्म-परिवर्तन तथा आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में अग्रसर करती है।

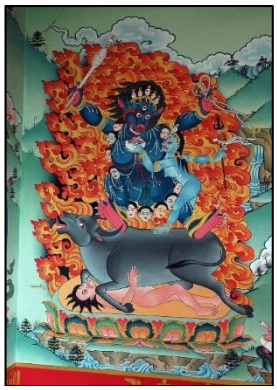

स्रोत: सन्दर्भ 11

सिद्ध परंपरा तथा वज्रयान तंत्र साधना

सिद्ध परंपरा भारतीय तंत्र साधना की एक महत्वपूर्ण धारा रही है जिसका उद्भव लगभग आठवीं से बारहवीं शताब्दी के दौरान हुआ। यह परंपरा मुख्यतः बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय तथा हिंदू तांत्रिक परंपराओं के अंतर्संबंध से विकसित हुई। सिद्धों को 'महासिद्ध' भी कहा जाता है जिनका योगदान न केवल तांत्रिक साधना के विस्तार में रहा अपितु इन्होंने ही योग, मंत्र, ध्यान की विशेष साधनाओं को भी प्रतिष्ठित किया। बौद्ध सिद्धों तथा नाथ संप्रदाय के योगियों के बीच घनिष्ठ संबंध दृष्टिगोचर होता था तथा दोनों ही परंपराएँ तंत्र, योग एवं सहज साधना के सिद्धांतों को साझा करती थीं। सिद्ध परंपरा में 'सहजयोग' की अवधारणा महत्वपूर्ण थी जिसके अंतर्गत साधक सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर सहज रूप से आत्मसाक्षात्कार की ओर अग्रसर होता था। बौद्ध महासिद्धों की साधनाएँ तथा नाथ संप्रदाय की योग साधना में समानता देखी जा सकती है विशेषतः कुंडलिनी जागरण एवं तंत्र-मंत्र के उपयोग विषयक (स्नेलग्रोव, 1987)। महासिद्धों की भूमिका वज्रयान तंत्र साधना में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है जहाँ महासिद्धों में सरहपा, विरूपा, लुइपा तथा डोम्बीपा प्रमुख थे, जिन्होंने तंत्र साधना के प्रयोगों को विकसित किया एवं अपने शिष्यों को विशेष तांत्रिक विधियाँ प्रदान कीं। सरहपा, जिन्हें वज्रयान तंत्र साधना का अग्रणी सिद्ध माना जाता है ने दोहाकोश जैसे ग्रंथों की रचना की, जो बौद्ध तंत्र परंपरा में एक नई दृष्टि प्रदान करते हैं। इसी भांति विरूपा को 'काली साधना' तथा गुप्त तांत्रिक विधियों का प्रवर्तक माना जाता है वहीँ लुइपा और डोम्बीपा ने तंत्र साधना में शाक्त एवं सहज मार्ग को एकीकृत किया (डेविडसन, 2002)। इन महासिद्धों की साधनाएँ मुख्यतः वज्रयान की सहजयान तथा महायोग परंपराओं से प्रभावित थीं, जहाँ आत्मज्ञान प्राप्ति हेतु साधक को बाह्यांतर रूपों में साधना करनी होती थी। तंत्र साधना के संदर्भ में इन महासिद्धों ने गुरुत्व, दीक्षा, योग साधना को विशेष महत्व दिया, जिससे कि वज्रयान की तांत्रिक प्रणाली अत्यधिक परिपक्व हुई। सिद्धों के ग्रंथों तथा साहित्य ने वज्रयान तंत्र साधना को एक ठोस आधार प्रदान किया। दोहाकोश, चौरासी सिद्धों की परंपरा एवं अन्य वज्रयान ग्रंथों में महासिद्धों की शिक्षाओं का संकलन किया गया जिसमें उनके तांत्रिक साधना पद्धतियों तथा योग संबंधी विचारों को संहिताबद्ध किया गया। सहजयोग-महायोग की अवधारणाएँ सिद्धों की शिक्षाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं जिनमें तांत्रिक साधना के माध्यम से ही आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। वज्रयान तथा शैव-शाक्त साधना में समानता इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि दोनों ही परंपराएँ ध्यान, कुंडलिनी जागरण, तंत्र-मंत्र, दीक्षा पद्धति को विशेष महत्व देती हैं साथ ही इन परंपराओं में गुरु-शिष्य संबंध को सर्वोपरि माना गया है जहाँ साधक को केवल दीक्षा के माध्यम से ही तांत्रिक मार्ग की वास्तविकता को समझने का अधिकार प्राप्त होता है। इस तरह सिद्ध परंपरा तथा वज्रयान तंत्र साधना का पारस्परिक प्रभाव भारतीय तांत्रिक परंपरा की एक समृद्ध एवं जटिल परंपरा को जन्म देता है जो आज भी विभिन्न साधना पद्धतियों में जीवंत रूप में विद्यमान है।

फोटो: वज्रयान योगिनी

भारतीय तांत्रिक परंपरा: वज्रयान का योगदान

भारतीय तांत्रिक परंपरा में वज्रयान बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, विशेष रूप से शैव, शाक्त, और नाथ तंत्र परंपराओं पर इसका गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। वज्रयान तंत्र साधना में प्रयुक्त मंत्र विज्ञान तथा ध्यान पद्धतियाँ शैव-शाक्त तंत्र परंपराओं से मिलती-जुलती हैं जिनमें विशेष रूप से बीजमंत्रों एवं यंत्रों का प्रयोग किया जाता है (डेविडसन, 2002)। उदाहरणार्थ वज्रयान में 'ओं मणि पद्मे हूं' जैसे मंत्रों का प्रयोग किया जाता है जो शिव और शक्ति की तांत्रिक साधना में प्रयुक्त मंत्रों की अवधारणा से मेल खाते हैं। भारतीय तंत्र ग्रंथों में यथा 'गुह्यसमाज तंत्र' तथा 'काली तंत्र', में गुरु के महत्व एवं तांत्रिक साधना की गूढ़ प्रक्रियाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है जो वज्रयान की गुरु-शिष्य परंपरा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, इस हेतु देखें तो वज्रयान तंत्र साधना ने भारतीय तांत्रिक परंपरा की गुरु-शिष्य परंपरा को और अधिक सुदृढ़ किया तथा उसे गूढ़ ध्यान पद्धतियों से समृद्ध किया। भारतीय तांत्रिक ग्रंथों में वज्रयान का प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। 'गुह्यसमाज तंत्र', 'हीवज्र तंत्र' तथा 'काली तंत्र' जैसे ग्रंथों में तांत्रिक साधनाओं का तुलनात्मक दृष्टि से अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि वज्रयान बौद्ध धर्म एवं शैव-शाक्त तंत्र साधनाओं के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है। 'गुह्यसमाज तंत्र' में ध्यान तथा मंडल-साधना की विधियाँ विस्तार से वर्णित हैं जो वज्रयान और हिंदू तंत्र साधनाओं के बीच की समानता को दर्शाती हैं इसी भांति 'हीवज्र तंत्र' में चक्र साधना एवं कुंडलिनी जागरण की पद्धतियाँ वर्णित हैं, जो शैव तंत्र के सिद्धांतों के ही समान हैं (स्नेल्ग्रोव, 1987)। 'काली तंत्र' में वामाचार परंपराओं का जो वर्णन किया गया है वह वज्रयान के वाम मार्ग एवं गूढ़ साधना पद्धतियों से मेल खाता है। इन ग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वज्रयान ने भारतीय तंत्र साधना की परंपरा में न केवल योगदान ही दिया अपितु उसकी विभिन्न शाखाओं को एक साझा तांत्रिक पद्धति में संगठित करने में भी सहायक रहा। वज्रयान की साधना पद्धतियाँ भारतीय तांत्रिक परंपराओं के विभिन्न पहलुओं को अपने भीतर समाहित करती हैं। कुंडलिनी जागरण तथा चक्र साधना वज्रयान एवं शैव-शाक्त परंपराओं में समान रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। वज्रयान की उच्चतम साधनाओं में महामुद्रा-महासंधि जैसी अवधारणाएँ शामिल हैं जो शैव तंत्र की कुंडलिनी शक्ति के जागरण एवं सहस्रार चक्र के उद्दीपन से जुड़ी हैं। इस सबके अलावा दाक्षिणाचार (शुद्ध तांत्रिक साधना) एवं वामाचार (गूढ़ तांत्रिक विधियाँ) परंपराएँ वज्रयान और हिंदू तंत्र में समान रूप से मौजूद हैं जिसमें साधक को विशिष्ट साधनाओं के माध्यम से उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त करने की प्रक्रिया सिखाई जाती है। वज्रयान तंत्र में विशेष रूप से वामाचार साधना के तत्व पाए जाते हैं, जिसमें योगिनी तंत्र, चक्र पूजन, पंचमकार साधना आदि जैसी विधियाँ देखी जा सकती हैं जो शैव-शाक्त तंत्र के वाममार्गी साधनाओं से अत्यधिक मेल खाती हैं। इस तरह वज्रयान न केवल बौद्ध तंत्र परंपरा का एक प्रमुख अंग रहा है अपितु इसने भारतीय तांत्रिक परंपराओं में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जिससे तंत्र साधना का एक समग्र एवं व्यापक रूप विकसित हुआ।

वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपरा: तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय तंत्र परंपरा तथा वज्रयान बौद्ध धर्म के बीच कई गहरे दार्शनिक-आध्यात्मिक समानताएँ पाई जाती हैं विशेषतः गुरु-शिष्य परंपरा में। भारतीय तंत्र साधना में गुरु को परम सत्ता एवं ज्ञान का स्रोत माना जाता है जो शिष्य को आध्यात्मिक मार्ग दिखाता है साथ ही तांत्रिक साधनाओं में दीक्षित भी करता है (डेविडसन, 2002)। वज्रयान तंत्र में भी गुरु-शिष्य परंपरा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है जहाँ गुरु को 'बुद्धस्वरूप' एवं 'वज्राचार्य' के रूप में देखा जाता है जो शिष्य को 'महामुद्रा' तथा 'महासंधि' जैसी गूढ़ साधनाओं की शिक्षा देता है। वज्रयान तथा हिंदू तंत्र साधनाओं में दीक्षा प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जहाँ एक योग्य गुरु द्वारा शिष्य को विशिष्ट अनुष्ठानों एवं रहस्यमयी साधनाओं की जानकारी दी जाती है। यह परंपरा नाथ संप्रदाय एवं कौल तंत्र में भी देखने को मिलती है जहाँ गुरु के बिना तंत्र मार्ग पर चलना असंभव माना जाता है। अतः, वज्रयान एवं भारतीय तंत्र परंपरा दोनों ही गुरु-शिष्य परंपरा को आध्यात्मिक उन्नति का अनिवार्य तत्व मानते हैं। वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपराओं में कर्मकांड, अनुष्ठान, योग साधनाओं की पद्धतियाँ भी अत्यधिक समान हैं यथा वज्रयान में 'मंडल' साधना, मंत्रों का जाप, विशेष मुद्राओं का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, जो भारतीय तंत्र परंपराओं के यंत्र, मंत्र एवं मुद्रा से गहराई से मेल खाता है (ग्रे, 2016)। वज्रयान में गुह्यसमाज तंत्र, हीवज्र तंत्र जैसे ग्रंथों में अनुष्ठानों और ध्यान साधना का उल्लेख मिलता है जो शैव-शाक्त ग्रंथों में वर्णित तंत्र साधना से काफी मिलते-जुलते हैं। भारतीय तंत्र साधना में कुंडलिनी जागरण की अवधारणा मिलती है जिसमें योग-प्राणायाम के माध्यम से शरीर के ऊर्जा चक्रों को सक्रिय किया जाता है वहीँ वज्रयान तंत्र में भी 'तुम्मो' (आंतरिक अग्नि) साधना तथा 'चक्र समाधि' जैसी प्रक्रियाएँ पाई जाती हैं जिनका उद्देश्य आध्यात्मिक ऊर्जा को जागृत करना होता है। इस सबके अतिरिक्त पंचमकार साधना (मांस, मछली, मदिरा, मुद्रा, मैथुन) की अवधारणा वज्रयान एवं शाक्त तंत्र परंपराओं में समान रूप से देखी जाती है, जहाँ इसे आध्यात्मिक उन्नति एवं लौकिक बाधाओं के अतिक्रमण का साधन माना जाता है (डेविडसन, 2002)। वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपरा में प्रतीकात्मक भाषा एवं दर्शन में भी घनिष्ठ संबंध पाए जाते हैं। वज्रयान बौद्ध धर्म में 'शक्ति' को 'प्रज्ञा' (बोधि या अंतर्ज्ञान) और 'करुणा' (दया और सहानुभूति) के रूप में देखा जाता है वहीँ हिंदू तंत्र परंपराओं में 'शक्ति' सृजनात्मक ऊर्जा का प्रतीक है, जो शिव के साथ एकाकार होकर ब्रह्मांडीय संतुलन स्थापित करती है (वाइट, 2000)। दोनों ही परंपराओं में शक्ति की साधना को मोक्ष प्राप्ति एवं आत्मसाक्षात्कार का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। वज्रयान के तांत्रिक ग्रंथों में डाकिनी-योगिनी का वर्णन मिलता है जो शाक्त परंपरा की 'देवी' अवधारणा से समानता रखता है। इस तरह देखें तो तंत्र साधना में शक्ति एवं करुणा की संयुक्त भूमिका वज्रयान तथा भारतीय तांत्रिक परंपराओं के बीच एक महत्वपूर्ण दार्शनिक साम्यता को प्रकट करती है। अतः वज्रयान न केवल बौद्ध तंत्र की एक विशिष्ट शाखा के रूप में उभरा अपितु इसने भारतीय तंत्र परंपरा के साथ घनिष्ठ रूप से एकीकृत होते हुए एक साझा साधना पद्धति को विकसित किया।

फोटो: श्रीयंत्र

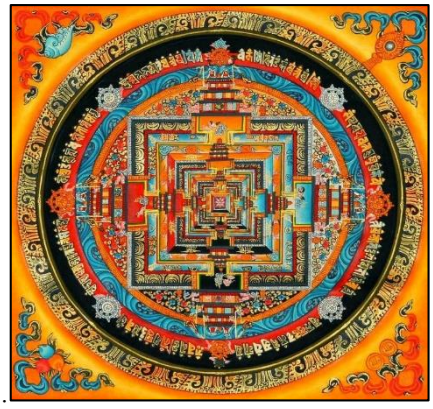

फोटो: वज्रयान मंडला

निष्कर्ष

वज्रयान तंत्र साधना तथा भारतीय तांत्रिक परंपरा के बीच गहरे अंतर्संबंध देखने को मिलते हैं। वज्रयान जो कि महायान बौद्ध धर्म की तांत्रिक शाखा के रूप में विकसित हुआ तथा भारतीय तंत्र परंपरा से अनेक तत्त्वों को आत्मसात किया। मंत्र, मुद्रा, यंत्र, ध्यान की विधियाँ वज्रयान के समान ही शैव-शाक्त तंत्र साधना में पाई जाती हैं। इसी तरह गुरु-शिष्य परंपरा, दीक्षा प्रक्रिया तथा साधना में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग दोनों परंपराओं की साझा विशेषताएँ हैं। वज्रयान की तंत्र साधना महासिद्धों की परंपरा के माध्यम से भारतीय योग एवं सहजयान परंपरा से प्रभावित रही जिसमें सहजयोग तथा महायोग की अवधारणाएँ भी सम्मिलित हैं। इस सबके अतिरिक्त कुंडलिनी जागरण एवं पंच मकार साधना जैसी प्रक्रियाएँ भी दोनों तंत्र साधनाओं में मिलती हैं जिससे इनकी आपसी गहन समानता का पता चलता है। भारतीय तंत्र परंपरा पर वज्रयान का स्थायी प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। नाथ संप्रदाय, शैव योगी परंपरा तथा शाक्त साधना पर वज्रयान महासिद्धों की शिक्षाओं का प्रभाव पड़ा जिसने भारतीय तंत्र साधना को समृद्ध किया उदाहरणार्थ वज्रयान के तांत्रिक ग्रंथ 'गुह्यसमाज तंत्र' एवं 'हीवज्र तंत्र' में दी गई ध्यान विधियाँ भारतीय तांत्रिक ग्रंथों में भी परिलक्षित होती हैं इसी भांति वज्रयान में 'डाकिनी' और 'योगिनी' साधना का उल्लेख मिलता है, जो शाक्त तंत्र परंपरा में 'देवी' तथा 'शक्ति' साधना से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार देखें तो वज्रयान न केवल भारतीय तंत्र परंपरा से प्रभावित हुआ अपितु उसने भी भारतीय तांत्रिक साधना की पद्धतियों को पुनः परिभाषित करने में योगदान दिया। भविष्य में इस विषयक शोध की असीम संभावनाएँ हैं। वज्रयान तंत्र साधना तथा भारतीय तंत्र परंपराओं के अंतर्संबंधों पर तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु और अधिक ग्रंथों के गहन पाठ विश्लेषण की आवश्यकता है। विशेषतः नाथ संप्रदाय एवं वज्रयान महासिद्धों की साधनाओं के बीच के अंतरसंबंधों को समझने हेतु प्राचीन पांडुलिपियों और तांत्रिक ग्रंथों का अध्ययन किया जा सकता है। इस सबके आलावा वर्तमान समय में तांत्रिक साधनाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को समझने हेतु नृविज्ञान तथा समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से शोध किया जा सकता है। वज्रयान तथा भारतीय तंत्र परंपरा के अंतर्संबंधों की पड़ताल न केवल धार्मिक-दार्शनिक अध्ययन के लिए उपयोगी होगी अपितु यह भारत और तिब्बत के सांस्कृतिक-ध्यात्मिक आदान-प्रदान को भी अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायक होगी।

संदर्भ

1. डेविडसन, आर. एम. (2002). इंडियन एसोटेरिक बौद्धिज़्म: अ सोशल हिस्ट्री ऑफ द तांत्रिक मूवमेंट. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. ग्रे, डी. बी. (2016). तांत्रिक ट्रेडिशन्स इन ट्रांसमिशन एंड ट्रांसलेशन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. सैमुएल, जी. (2008). द ओरिजिन्स ऑफ योगा एंड तंत्र: इंडिक रिलिजन्स टू द थर्टींथ सेंचुरी. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. स्नेलग्रोव, डी. (1987). इंडो-तिबेटन बौद्धिज़्म: इंडियन बौद्धिस्ट्स एंड देयर तिबेटन सक्सेसर्स. शाम्भाला पब्लिकेशन्स।
5. वेडेमेयर, सी. के. (2013). मेकिंग सेंस ऑफ तांत्रिक बौद्धिज़्म: हिस्ट्री, सेमियोलॉजी, एंड ट्रांस्ग्रेशन इन द इंडियन ट्रेडिशन्स. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. व्हाइट, डी. जी. (2000). द अल्केमिकल बॉडी: सिद्धा ट्रेडिशन्स इन मेडिएवल इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
7. ब्रूक्स, डग्लस रेने (1990). द सेक्रेड एंड द सेक्रिलेजियस: तांत्रिक बौद्धिज़्म इन इंडिया. प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. वासुदेवन, के. (2012). तांत्रिक ट्रांसफॉर्मेशंस: बौद्ध, शैव, एंड शाक्त ट्रैडिशन्स इन इंडिया. रूटलेज।
9. सैंडरसन, एलेक्सिस (2007). द विजुअल एंड टेक्सचुअल ट्रेडिशन्स ऑफ तंत्र इन इंडिया एंड तिब्बत. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. भट्टाचार्य, बिद्युत (2015). तंत्र एंड धर्म: ए स्टडी ऑफ रिलिजियस सिंक्रेटिज़म. इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च।
11. वज्रयान: द सागा ऑफ़ बुद्धिस्ट एंड हिंदू आइडियल्स। (n.d.). द संडे गार्जियन। प्राप्त किया गया https://sundayguardianlive.com/culture/vajrayana-saga-buddhist-hindu-ideals से।